HOME SCIENCE

गृह विज्ञान (स्तर) (गृह व्यवस्था)

PAPER - IV, PART - II

स्तर:—

स्तर गृह व्यवस्था के प्रेरक तत्वों के रूप में तीसरा प्रमुख तत्व है। स्तर मूल्य, मूल्य एवं लक्ष्य की अपेक्षा अधिक स्पष्ट होते हैं। किसी व्यक्ति के मूल्य एवं लक्ष्य के विषय में केवल अनुमान लगाया जा सकता है जबकि स्तर को स्पष्ट रूप से विपरीत निरीक्षित किया जा सकता है। व्यक्तिगत परम्परागत स्तर को ग्रहण करते हुए अधिक सोच विचार नहीं करता, परन्तु आवास, भोजन, रहन सहन, शिक्षा आदि के स्तर निर्धारण में बहुत अधिक विचार करता है।

अर्थ: स्तर की व्याख्या उन मानकों के माध्यम से की जा सकती है जिनसे हमें सन्तुष्टी प्राप्त होती है। स्तर हमारे जीवन को रहने योग्य बनाते हैं। प्रायः व्यक्ति अपने मन मस्तिष्क में एक निश्चित स्तर की कल्पना करता है एवं यथार्थ में उस स्तर को पाने के लिये परिश्रम करता है। स्तर के उदाहरण हैं, रहन सहन का स्तर, शिक्षा का स्तर, खान पान का स्तर आदि।

स्तर की परिभाषा:— कूपर के अनुसार – " हम प्रत्येक कार्य के लिये स्तर को निर्धारित करते हैं। हम आन्तरिक रूप से सोचते हैं कि हमें इससे अधिकतम कितनी सन्तुष्टी मिलेगी तथा बाह्य रूप से इसके अधिकतम सहयोग द्वारा हम अपने जीवन की योजनाओं को समझते हैं"।

ग्रॉस एवं क्रेन्डल के शब्दों में: " गृह व्यवस्था से सम्बन्धित अधिकतम स्तरों को जीवन के रहने योग्य बनाने हेतु आवश्यक समझे जाने वाले स्थितियों के मानसिक चित्र के रूप में परिभाषित किया जा सकता है"।

निकिल एवं डार्सी के अनुसार: " स्तर मूल्य के मापक होते हैं जिनकी उत्पत्ति हमारे मूल्यों से होती है। यह हमारी किसी वस्तु में रुचियों की मात्रा एवं उनके प्रकार को निर्धारित करती है"।

विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं से आप यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि स्तर एक स्वतंत्र रूप से सोचा गया जीवन मानक है। व्यक्ति अपने स्तर को कितना उच्च या निम्न बना सकता है, यह व्यक्ति पर निर्भर करता है। व्यक्ति स्तर को चित्र कल्पनाओं का अदृश्य, अलिखित रूप में अपने मानस पटल

पटल पर अंकित करता है तथा यथार्थ में उस स्तर तक पहुँचने हेतु संसाधनों एवं ~~प्रयत्नों~~ प्रयत्नों द्वारा ध्यान केन्द्रित करता है। वांछित स्तर को प्राप्त करने में प्रसन्नता, संतुष्टी एवं आत्म तृप्ती का अनुभव होता है। ऐसा न होने पर व्यक्ति को निराशा और कुण्ठा घेर लेती है।

स्तरों की विशेषताएँ :-

स्तरों की निम्न विशेषताएँ हैं।

★ स्तर कार्य करने का ढंग स्पष्ट करते हैं तथा यह बताते हैं कि व्यक्ति किस प्रकार अपना

★ स्तर सदैव मूल्यों और लक्ष्यों से अधिक स्पष्ट होते हैं क्योंकि स्तरों को सदैव निरीक्षित किया जा सकता है।

★ स्तर व्यक्ति और समूहों के मध्य सदैव गतिशील रहते हैं।

★ व्यक्ति स्तरों को मानने के लिये बाध्य नहीं होते रहते हैं। वह स्तर का निर्धारण स्वयं करते हैं।

स्तरों का वर्गीकरण :

स्तरों को दो भागों में भागों में वर्गीकृत किया गया है।

1. परम्परागत स्तर
2. परिवर्तनशील स्तर

परम्परागत स्तर : परम्परागत स्तर प्राचीन और स्थिर होते हैं। इन्हें समाज के बड़े समूह द्वारा मान्यता प्राप्त होती है तथा यह सर्व स्वीकृत होते हैं। ये पीढ़ी दर पीढ़ी स्वतः ही हस्तान्तरित होते हैं। इस सम्बन्ध में निकिल एवं डार्सी ने अपनी पुस्तक "Management in family living" में लिखा है कि व्यक्ति समाज में रहता है। वह समाज द्वारा निर्धारित नियमों, मूल्यों एवं स्तरों का पालन न चाहते हुए भी करता है। उस समाज द्वारा निर्धारित स्तर को प्राप्त करने के लिये आवश्यकानुसार स्वयं को बदलना पड़ता है तथा समाज के साथ सामंजस्य बैठाना पड़ता है, भले ही इसके लिये उसे कवच उठाना पड़े। परम्परागत स्तर उच्च स्तर है जिनको बनाये रखनेलिए अधिक श्रम एवं प्रयास की आवश्यकता होती है।

परिवर्तनशील स्तर : यह स्तर अधिकांश व्यक्तियों द्वारा अस्वीकार्य होते हैं। यह स्थिति समय और व्यक्ति के अनुसार बदलते रहते हैं। इन स्तरों में धन, समय और प्रयत्नों को मूल्य के रूप में महत्व दिया जाता है। ये स्तर परम्परागत स्तरों के विपरीत होते है जिन्हें व्यक्ति अपनी इच्छा, रुचि आवश्यकता एवं सुविधानुसार बदल देते है। यह आवश्यक नहीं है कि इन स्तरों को समाज द्वारा मान्यता प्राप्त हो क्योंकि इनका निर्माण व्यक्तिगत स्तर पर होता है। वर्तमान के समय में कामकाजी लोगों के लिए ये स्तर सर्वाधिक उपयुक्त माने गए है। ये स्तर विशेषकर उन लोगों के लिए भी कारगर है जिनके पास धन, समय या श्रम का अभाव है। उदाहरण के लिये समय पर्याप्त होने पर खाने के लिये हम स्वयं विविध पकवान तैयार करते है परन्तु समय न होने पर भोजन में विविधता न देखकर मात्र पेट भर जाने पर जोर देते हैं।

स्तर चाहे परम्परागत हो या परिवर्तनशील, दोनों में आपसी संबन्ध ~~बना~~ पर ~~हम भोजन~~ में होता है। परिवार में हंसी खुशी बनाये रखने के लिये इन दोनों स्तरों के मध्य संतुलन बनाना अति आवश्यक है।

Contd